

"यह एक प्रेरक और प्रभावशाली कहानी है! यह कहानी मेरी विश्वविद्यालय के पहले वर्ष से शुरू होती है, जिसमें अनेक समस्याएँ आईं। मेरे माता-पिता का अलगाव हुआ, मेरा कार दुर्घटना में पड़ना, और मेरे एक मित्र का निधन।

मैंने स्वयं से पूछा, 'मैं यहाँ क्यों हूँ? जीवन का उद्देश्य क्या है?' और मैं जीवन के उद्देश्य पर संदेह करने लगा। चूँकि मैं ईसाई था, अतः मैंने खोजबीन शुरू की।

मैं एक चर्च शिविर में गया, जहाँ मैंने पाया कि लोग गाने गा रहे थे, जिनके शब्द मैं नहीं समझता था। मैंने उन सवालों को पूछा, जो मुझे परेशान कर रहे थे। लेकिन उन्होंने बाइबल खोलकर उत्तर नहीं दिया, बल्कि हर व्यक्ति ने अपना व्यक्तिगत विचार प्रस्तुत किया।

उनके उत्तर एक-दूसरे से भिन्न थे, और कभी-कभी विरोधाभासी भी। यहाँ तक कि उनकी ईश्वर की कल्पनाएँ भी कमजोर, विरोधाभासी और अस्वीकार्य थीं।

मैंने सोचा, 'ईश्वर कैसे सूली पर चढ़ाया जा सकता है और कष्ट सहन कर सकता है?' और तब मैंने महसूस किया कि ईसाई धर्म में बहुत सारी व्याख्याएँ हैं।

विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान, मैं एक पेट्रोल पंप पर काम करता था। वहाँ मेरा एक सहकर्मी, जो एक भारतीय हिंदू था, से मैंने पूछा, 'हाथी के सिर वाला हिंदू ईश्वर क्या है? क्या आप उसके स्थान पर एक शेर का सिर वाला ईश्वर नहीं चुन सकते थे?'

हिंदू धर्म ने मुझे प्रभावित नहीं किया। मैंने अन्य धर्मों के बारे में अध्ययन जारी रखा। मैंने यहूदी धर्म के बारे में जानने की कोशिश की। लेकिन बहुत खोजबीन के बाद, मैंने पाया कि उनकी ईश्वर की कल्पना भी ईसाई धर्म के पादरियों की तरह विरोधाभासी थी।

यहूदी धर्म में भी मैंने वह नहीं पाया, जिसकी मैं तलाश कर रहा था।

अंततः मैंने बौद्ध धर्म पर शोध किया और सोचा कि यही वह धर्म है जिसे मैं चुनूँगा। लेकिन गहराई से अध्ययन करने पर मैंने पाया कि यह धर्म नहीं है, बल्कि एक आकर्षक जीवनशैली है।

एक दिन, मेरे एक मित्र ने मुझसे उन धर्मों के बारे में पूछा, जिन पर मैंने शोध किया था। मैंने कहा, 'मैंने ईसाई धर्म, हिंदू धर्म, यहूदी धर्म और बौद्ध धर्म का अध्ययन किया।' उसने पूछा, 'तो इस्लाम के बारे में क्या?'

मैंने कहा, 'मैं इस्लाम पर अध्ययन नहीं करूँगा। मुझे क्या प्रेरित करेगा कि मैं उनके धर्म की ओर जाऊँ?'

लेकिन कुछ समय बाद, मैंने खुद को एक मस्जिद के अंदर पाया, बिना अपने जूते उतारे, नमाज़ की चटाई पार करता हुआ। मैं लगभग एक सजदा कर रहे व्यक्ति के सिर पर कदम रखने वाला था।

तभी मैंने देखा कि एक मौलवी मेरी ओर मुस्कुराते हुए बढ़ रहे हैं और उन्होंने कहा, 'मेरे दोस्त, यह एक खूबसूरत दिन है। तुम कैसे हो?'

मौलवी के इस स्वागत ने मुझे प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया। मैंने वही प्रश्न पूछे जो मैंने पहले पूछे थे।

सबसे चौंकाने वाली बात यह थी कि जब मैं सवाल करता था, वे तुरंत जवाब नहीं देते थे। वे कुरआन उठाकर कहते, 'यहाँ पढ़ो, मेरे भाई।' और वहाँ मुझे हर कठिन सवाल का उत्तर मिलता।

दो सप्ताह के बाद, मैंने एक मुसलमान से पूछा, 'तुम मुझे अपना व्यक्तिगत विचार क्यों नहीं देते?' उसने कहा, 'हम अल्लाह की बात कर रहे हैं, तो मेरा व्यक्तिगत विचार नहीं हो सकता।' यह बात मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ गई।

तब मैंने कुरआन की एक प्रति अपने घर ले ली और पढ़ना शुरू किया। यह किसी कहानी को पढ़ने जैसा नहीं था। बल्कि यह कुछ ऐसा था जो मुझे आदेश और दिशा दे रहा था।

एक रात मैंने उस सच्चाई पर विचार किया जो पहाड़ों के पेग जैसी होती है या भ्रूण के माँ के गर्भ में बनने की प्रक्रिया जैसी होती है। और मैंने कहा, 'हे अल्लाह, मुझे मार्ग दिखा।' तब मेरी स्थिति पूरी तरह से बदल गई। मैंने महसूस किया कि अल्लाह ने मुझे यह दिखाया है कि इस ब्रह्मांड की सुंदरता और अद्भुत संरचना बिना किसी सृष्टिकर्ता के संभव नहीं है।

मैंने मुसलमान बनने और कलमा पढ़ने का निर्णय लिया। जब मैंने इसे पढ़ा, तो मेरे सभी डर और शंकाएँ मिट गईं। मेरी अपने पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने की आदत ने उन्हें यह समझने में मदद की कि इस्लाम की सच्चाई उन झूठी अफवाहों से भिन्न है जो इसके बारे में फैलाई जाती हैं।

इसलिए उन्होंने मुझसे कुरआन मांगा और मुझे पूरा विश्वास है कि वे जल्द ही इस्लाम कबूल करेंगे, इन शा अल्लाह।"